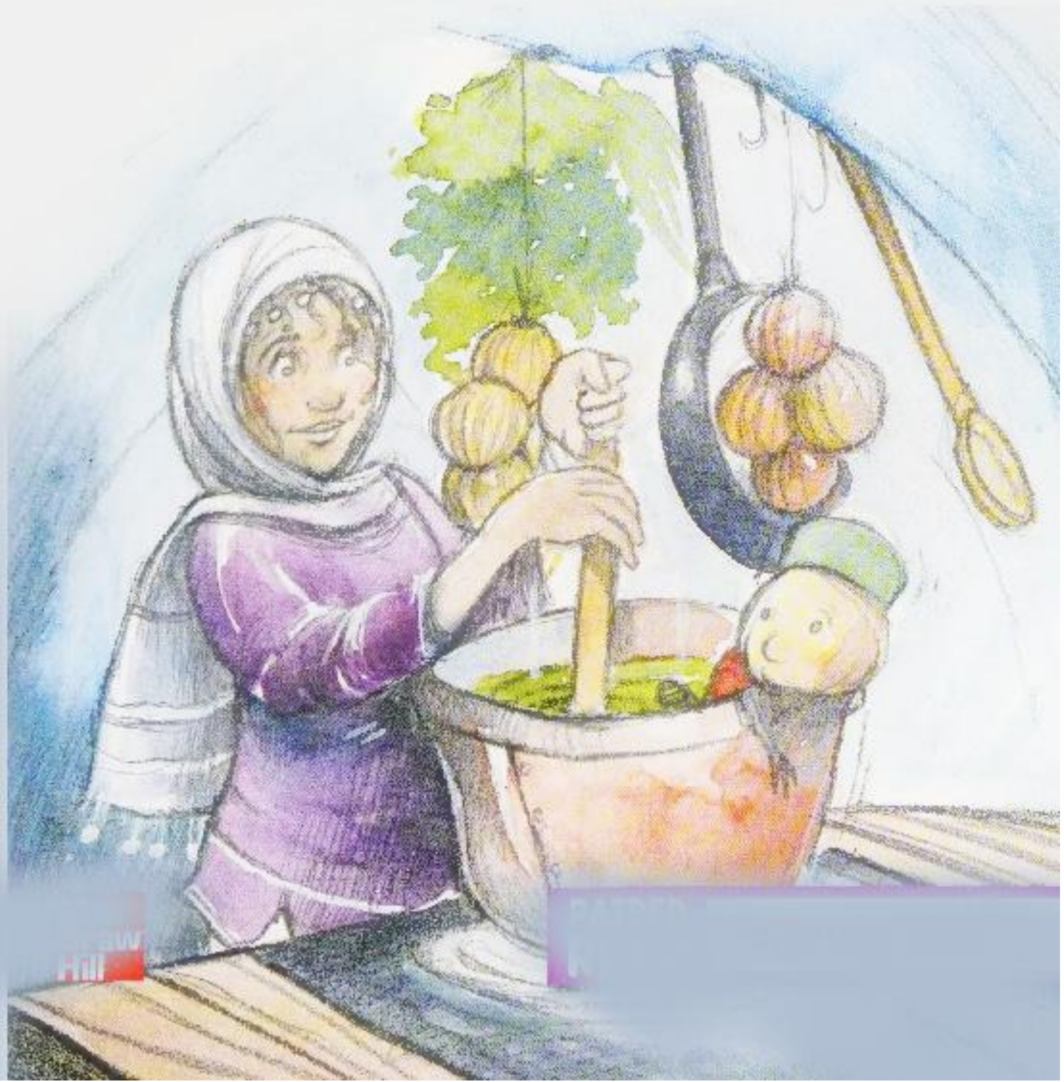
चने का लड़का

एक फ़ारसी परी कथा

पुनर्कथन: फ़्रेडरिका ब्राउन

चित्र: रॉबर्ट डन



चने का लड़का

एक फ़ारसी परी कथा

पुनर्कथन: फ्रेडरिका ब्राउन

चित्र: रॉबर्ट डन

अध्याय 1

सूप से बाहर

एक दिन, एक गरीब और विनम्र महिला अपने और अपने पति के लिए कुछ सूप पका रही थी. खाना बनाते समय उसकी इच्छा हुई कि उसका अपना एक बच्चा हो. उसे बहुत आश्चर्य हुआ, जब एक चना बर्तन से बाहर कूदा और एक छोटे लड़के में बदल गया.





"तुम कौन हो?" महिला ने चिल्लाते हुए पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?"

"नमस्ते, माँ," चने के लड़के ने कहा.

"मैं वह बच्चा हूँ जिसकी आपने कामना की थी! क्या मैं थोड़ा सूप पिताजी के पास ले जाऊँ?"

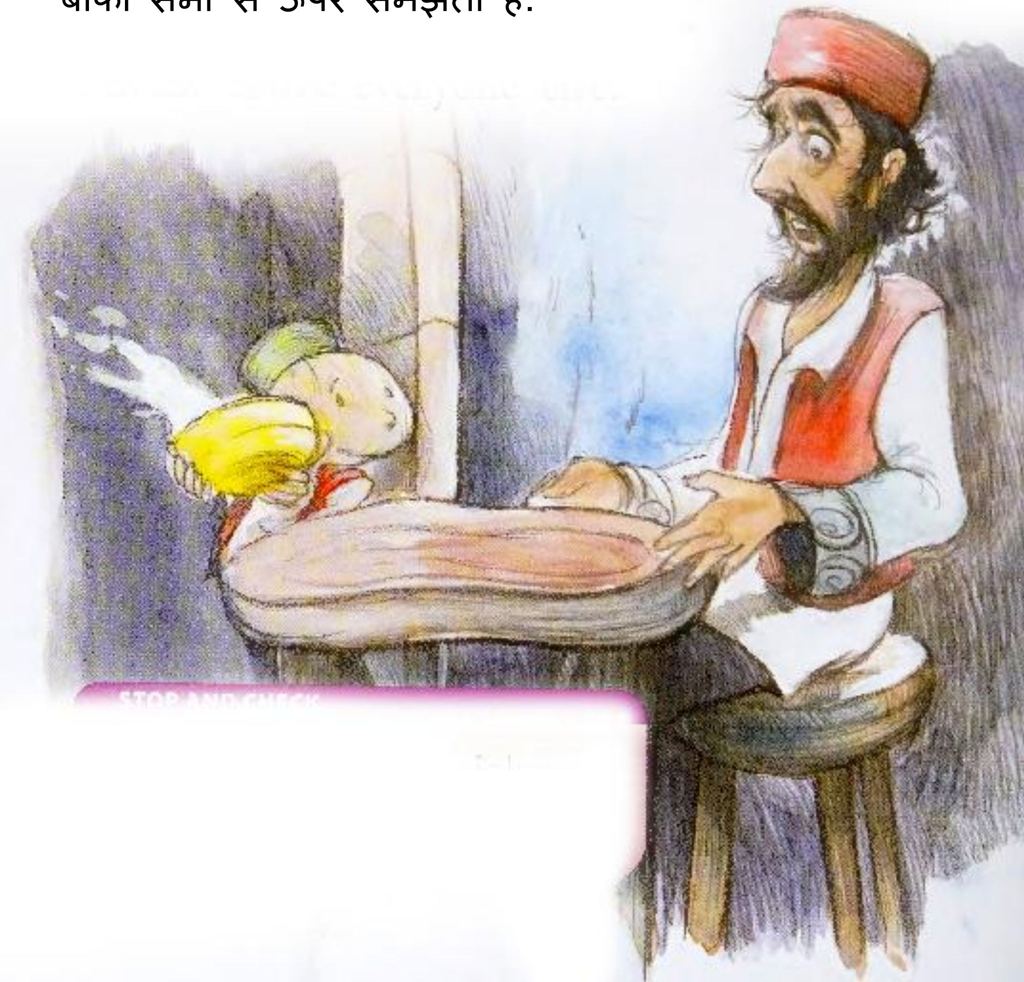
महिला ने एक कटोरे में सूप डाला, और चने वाला लड़का उसे सावधानी से पिताजी के पास ले गया.

"नमस्ते, पिताजी!" चने के लड़के ने कहा. "यह कुछ सूप है जो माँ ने बनाया है."

"तुम कौन हो?" आदमी ने पूछा.

"मैं आपका बेटा हूँ," चने वाले लड़के ने उत्तर दिया.

"अच्छा तुम हो?" आदमी ने कहा. "फिर तुम मेरे लिए एक काम कर सकते हो. कभी मैंने राजा को एक सिक्का उधार दिया था. जाओ और उससे वो वापस मांगकर लाओ. राजा मेरा सिक्का जल्दी लौटाएगा नहीं. राजा को अपना ऋण चुकाने की कोई आवश्यकता नज़र नहीं आती. वह खुद को बाकी सभी से ऊपर समझता है."



अध्याय 2

राजा से मिलने के लिए

चने वाला लड़का चल पड़ा. वह तब तक चलता रहा जब तक वह एक नदी के पास नहीं पहुँच गया. वहाँ एक महिला कपड़े धो रही थी. चने वाले लड़के ने उससे अपनी टोपी धोने को कहा.

"नहीं, मैं तुम्हारी टोपी नहीं धोऊँगी," महिला ने कहा. "मेरे पास धोने के लिए बहुत सारे कपड़े हैं!"





"अब तुम कपड़े नहीं धो पाओगी!" चने वाले लड़के ने कहा. वह नीचे झुका और नदी का पूरा पानी पी गया. फिर वह आगे बढ़ गया. महिला उसे घूरते हुए देखती रही.

थोड़ा आगे जाकर, एक तेंदुआ उसके सामने आकर कूदा.

"तुम कहाँ जा रहे हो?" तेंदुए ने पूछा.

"मैं राजा से एक सिक्का लेने जा रहा हूँ," चने वाले लड़के ने कहा.

"क्या मैं भी आ सकता हूँ?" तेंदुए ने पूछा.

"लेकिन महल बहुत दूर है," चने वाले लड़के ने कहा.

"तुम मुझे सवारी दे सकते हो," तेंदुए ने कहा.

"चलो कूदो अंदर," चने वाले लड़के ने कहा. फिर उसने अपना मुंह खोला, और तेंदुआ उसके अंदर कूद गया.



थोड़ा आगे बढ़ने पर एक भेड़िया उसके सामने आकर कूदा.

भेड़िये ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं राजा से एक सिक्का लेने जा रहा हूँ"

चने वाले लड़के ने कहा.

"क्या मैं भी आ सकता हूँ?" भेड़िये ने पूछा.

"लेकिन महल बहुत दूर है," चने वाले लड़के ने कहा.

"तुम मुझे सवारी दे सकते हो," भेड़िये ने कहा.

"चलो कूद जाओ," चने वाले लड़के ने कहा.

उसने अपना मुँह खोला और भेड़िया उसके अंदर कूद पड़ा.



थोड़ा आगे बढ़ने पर एक सियार उसके सामने आकर कूदा.

"तुम कहाँ जा रहे हो?" सियार ने पूछा.

"मैं राजा से एक सिक्का लेने जा रहा हूँ"

चने वाले लड़के ने कहा.

"क्या मैं भी आ सकता हूँ?" सियार ने पूछा.

"पर महल बहुत दूर है," चने वाले लड़के ने कहा.

"तुम मुझे सवारी दे सकते हो," सियार ने कहा.

“चलो, कूद जाओ," चने वाले लड़के ने कहा.

उसने अपना मुँह खोला, और सियार उसमें कूद पड़ा.



अध्याय 3

राजा के दरबार में

आखिरकार चने वाला लड़का राजा के दरबार में पहुँचा. जैसे कि पिता ने उसे बताया था, राजा सिक्का वापस नहीं देना चाहता था. राजा ने अपने सेवकों को आदेश दिया कि वे चने वाले लड़के को उसके पक्षियों के सामने फेंक दें.

"पक्षी उसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे," राजा ने कहा.

सेवकों ने चने वाले लड़के को लड़ने वाले पक्षियों के साथ अकेला छोड़ दिया. जैसे ही लड़का अकेला हुआ, उसने अपना मुँह खोला. भेड़िया और सियार बाहर कूद पड़े और उन्होंने सभी पक्षियों को पकड़ लिया. फिर वे दोनों घर चले गए. जब राजा के सेवक सुबह को वापस आए, तब उन्होंने चने वाले लड़के को उनका इंतज़ार करते हुए पाया.

नौकरों ने राजा को खबर दी.

"उसे चिड़ियाघर में फेंक दो! जानवर उससे निपट लेंगे," राजा ने आदेश दिया. नौकरों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें बताया गया था. जैसे ही चने वाला लड़का अकेला हुआ, उसने अपना मुँह खोला. फिर तेंदुआ बाहर कूदा और वो सभी जानवरों को खा गया.

जब सुबह राजा के नौकर आए, तो उन्होंने चने वाले लड़के को सुरक्षित और स्वस्थ पाया.



नौकरों ने राजा को खबर दी.

"उसे जलते हुए पुआल के कमरे में फेंक दो!" राजा ने आदेश दिया. "वो धुएं को झेल नहीं पाएगा."

नौकरों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें आदेश दिया गया था. लेकिन जैसे ही चने का लड़का अकेला हुआ, उसने अपना मुँह खोला. उसके मुंह से पूरी नदी का पानी बह निकला और उससे आग बुझ गई. फिर वह सो गया, और राजा के नौकरों ने अगली सुबह उसे अभी भी सोते हुए पाया.





राजा को समझ में नहीं आया कि क्या करें. राजा ने अपने सबसे बुद्धिमान सलाहकार से पूछा.

"मुझे नहीं लगता है कि हम इस लड़के को हरा पाएंगे," सलाहकार ने कहा. "इसलिए उसे भुगतान के रूप में एक सिक्का दे देना और उसे चले जाने के लिए कहना ही बेहतर होगा."

"मुझे यह स्वीकार करने में मुश्किल हो रही है," राजा ने कहा, "लेकिन मुझे लगता है कि यही करना उचित होगा."

अनिच्छा से, राजा ने अपने सेवकों को चने वाले लड़के को खजाने के कमरे में ले जाने का आदेश दिया. उन्होंने वैसा ही किया जैसा उन्हें बताया गया था. जब वो खजाने में अकेला था, तब चने वाले लड़के ने अपना मुंह खोला और फिर वो जितना सोना और चांदी निगल सकता था, वो निगल गया. फिर उसने एक सिक्का अपने हाथ में लिया और घर की ओर चल दिया.



जब चने वाला लड़का घर पहुंचा, तो उसने सिक्का अपने पिता को सौंप दिया. उसने अपनी माँ को गले लगाया. जैसे ही मां ने उसकी पीठ थपथपाई, उसका मुंह खुल गया, और उसमें से सारा सोना और चांदी बाहर निकल आया. वे अब गरीब नहीं रहे थे. वे अमीर हो गए थे.

